International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 113-115

वृद्धि केन्द्रों की संकल्पना

डॉ. श्याम बिहारी तिवारी*

प्रस्तावना

आर्थिक विकास की गति को तीव्र करना वर्तमान समय की पहली प्राथमिकता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने तथा विभिन्न क्षेत्रों एवं प्रदेशों के बहुआयामी विकास हेतु वर्तमान समय में वृद्धि ध्रुव एवं वृद्धि केन्द्रों की संकल्पना पर विशेष बल दिया जा रहा है। वृद्धि केन्द्रों की संकल्पना को आर्थिक एवं प्रादेशिक विकास का आधार बनाने के अनेक प्रयास किये गये हैं। परन्तु अभी तक पूर्ण विकसित एवं सर्वमान्य नीति सामने नहीं आ पायी है। विकास के सन्दर्भ में इस प्रकार के अनेक शब्द प्रयोग में लाये गये हैं जैसे – वृद्धि ध्रुव, वृद्धि केन्द्र तथा वृद्धि ग्रन्थि आदि। अनेक औद्योगिक एवं विकसित देशों में वृद्धि एवं वृद्धि केन्द्रों को क्षेत्रीय विकास के एक महत्वपूर्ण यन्त्र के रूप में अपनाया जा रहा है।

वृद्धि केन्द्र की अवधारणा समन्वित भूवैन्यासिक विकास नीति का आधारभूत तत्व है। वृद्धि केन्द्र क्षेत्र विशेष में विकास प्रक्रिया को उत्प्रेरित करने के साथ–साथ कर्मोपलक्षी अन्योन्य क्रियाओं को सशक्त माध्यम प्रदान कर विभिन्न विकास परक अभिज्ञानों के प्रवर्तन में सहायक होते हैं। समन्वित ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में परिवर्तित लक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय अधिवासों एवं वृद्धि केन्द्रों का भू–वैन्यासिक विश्लेषण तथा उनकी अन्योन्य क्रिया के प्रारूप की व्याख्या विकास के किसी भी मॉडल के प्रतिपादन हेतु प्राथमिक आवश्यकता होती है। वृद्धि केन्द्र अपने समीपवर्ती अधिवासों के कृषि उत्पादों को एकत्रित कर उनके पदानुक्रमीय विनिमय को प्रभावित करते हैं। साथ ही ग्रामीण जनसंख्या के आवश्यक कृषि परक नगरीय उत्पादों को प्रदान करते हैं। अतः स्पष्ट है कि समन्वित क्षेत्रीय विकास एवं भौतिक विकास तथा नियोजन के सन्दर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक एवं भौतिक अवस्थापना तत्वों के तर्क संगत वितरण में वृद्धि केन्द्रों की अहम भूमिका होती है क्योंकि भूवैन्यासिक तन्त्र क्षेत्रीय विकास प्रक्रिया के लिए संरचनात्मक आधार प्रस्तुत करता है।

पैराक्स[1] वह पहला व्यक्ति था जिसने 1955 में आर्थिक विकास की वास्तविक प्रक्रियाओं के निरीक्षण एवं अनुभव के आधार पर वृद्धि की संकल्पना प्रतिपादित की थी। इस सिद्धान्त का मूल आधार यह था कि विकास सभी स्थानों पर समान रूप से नहीं होता है। साथ ही यह यकायक भी पैदा नहीं होता है। वस्तुतः विकास कुछ सुविधाजनक केन्द्रों पर आरम्भ होकर अनके मार्गो के माध्यम से फैलता है। उन्होंने यह भी बताया कि विकास सामाजिक आर्थिक क्रियाओं के स्थानीय संगठन के फलस्वरूप उत्पन्न होता है।

सामाजिक–आर्थिक मानवीय क्रियाओं का असमान वितरण परस्पर दो विरोधी प्रवृत्तियों के केन्द्रीयकरण या संघनन एवं बिखराव का परिणाम है। केन्द्रीयकरण अभिकेन्द्रीय शक्तियों तथा बिखराव के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। पैराक्स के सिद्धान्त की सबसे बड़ी विशेषता आर्थिक स्थान की संकल्पना है। जिसमें अनेक ध्रुव या केन्द्र सम्मिलित होते हैं। जिसमें अधिकेन्द्रीय शक्तियॉ बाहर की ओर बल लगाती हैं जबकि अभिकेन्द्रीय शक्तियॉ केन्द्रों की ओर आकर्षण रखती हैं। प्रत्येक केन्द्र आकर्षण एवं विकर्षण केन्द्र के रूप में अपने–अपने क्षेत्र रखता है तथा जो अन्य केन्द्रों के क्षेत्रों में निहित होता है। पैराक्स की इस संकल्पना को मिडलि, हिर्समैन[2], लेसयून[3] तथा मैसल[4] द्वारा पुर्नसम्बन्धित तथा संगठित किया गया है।

* प्राध्यापक, एम.जी.एम. इण्टर कॉलेज, जलेसर, एटा, उत्तर प्रदेश।

केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त

पैराक्स का वृद्धि केन्द्र सिद्धान्त क्रिस्टालर[5] तथा लॉश[6] के केन्द्रस्थल सिद्धान्त पर आधारित है। केन्द्र स्थल सिद्धान्त मानव अधिवासों के अवस्थापन, वितरण तथा पदानुक्रम से सम्बन्धित है। क्रिस्टालर के नगरीय तथा ग्रामीण अधिवासों के सम्बन्ध में एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया और उसे 1938 में अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल कांग्रेस के अधिवेशन में अपने शोध पत्र द्वारा प्रस्तुत किया। क्रिस्टालर ने अपने सिद्धान्त के लिए ऐसे समरूप स्थलाकृति वाले प्रदेश की कल्पना की जिस पर विभिन्न संसाधनों– जनसंख्या, परिवहन के साधनों आदि के वितरण में भी समरूपता हो।

ऐसी आदर्श दशाओं वाले प्रदेश में केन्द्र स्थल अथवा सेवा केन्द्र पर उपलब्ध होने वाली सेवा का कार्य मॉग, परिवहन लागत तथा अर्थव्यवस्था के पैमाने आदि कारकों के अनुरूप अपने बाजार क्षेत्र का निर्धारण करेगा।

चूँकि केन्द्र स्थल सिद्धान्त वृद्धि केन्द्र की संकल्पना से अत्यन्त घनिष्ठता से सम्बन्धित है। अतः यहॉ क्रिस्टालर के केन्द्र स्थल सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करना सम्यक होगा।

- केन्द्र स्थल सिद्धान्त ऐसे अधिवासों के स्थापन, वितरण तथा पदानुक्रम से सम्बन्धिता है, जो चारों ओर के क्षेत्र को विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं।
- केन्द्रस्थल सिद्धान्त की संकल्पना के अनुरूप केन्द्रस्थल/वृद्धिकेन्द्र किसी समरूप धरातल वाले क्षेत्र में समान दूरी पर स्थित पाये जाते हैं। ये अपने चारों ओर ाटभुजाकार क्षेत्र रखते हैं।
- केन्द्रस्थल या सेवाकेन्द्र/वृद्धि केन्द्र, जो अपने पृष्ट प्रदेश को विभिन्न सेवाऐं प्रदान करते हैं, न्यूनतम औसत दूरी पर स्थित होते हैं, जिससे पृष्ठ प्रदेश के निवासियों को न्यूनतम यात्रा व्यय वहन करना पड़े तथा विक्रेताओं को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।
- केन्द्र स्थलों/वृद्धि केन्द्रों में सदैव एक पदानुक्रम विद्यमान रहता है। उच्च पदानुक्रम वाले केन्द्रस्थल, निम्न पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थलों द्वारा प्रदत्त सुविधाओं के साथ–साथ उच्च स्तर की सेवाऐं भी प्रदान करते हैं।
- उच्च पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थल निम्न पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थलों की तुलना में बड़े सेवा क्षेत्र का नियंन्त्रण करते हैं।
- उच्च पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थल निम्न पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थलों की तुलना में संख्या में कम तथा दूर–दूर स्थित होते हैं।
- उच्च पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थलों का प्रमुख निम्न पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थलों के प्रभाव क्षेत्र की तुलना में बड़ा होता है। साथ ही यह अपने निम्न पदानुक्रम वाले केन्द्र स्थलों के सेवा क्षेत्रों को अपने में समाहित किये होते हैं।

केन्द्र स्थल सिद्धान्त एक स्थैतिक सिद्धान्त है। यह अधिवासों के वर्तमान प्रचलित प्रतिरूप की ही विवेचना करता है न कि सम्भावय रूपान्तरण की क्रिस्टालर के अनुसार किसी स्थान की केन्द्रीयता उसके महत्व का मापक होती है। किसी स्थान अथवा अधिवास की जनसंख्या भी महत्वपूर्ण सहयोगी कारक होती है। परन्तु सर्वाधिक महत्व उस स्थान द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं, कार्यो की संख्या, प्रकृति, जटिलता एवं उन सेवाओं की पहुंच या प्रभाव का होता है।

डॉ. एल. के. सेन[6] – के अनुसार वृद्धि केन्द्र एक ऐसा नगरीय क्षेत्र है जो ग्रामीण प्रभाव क्षेत्र रखता है तथा वृद्धि की क्षमता रखता है। इसकी एक अन्य विशेषता यह भी है कि यह अपने आस–पास के क्षेत्रों को अनेक प्रकार की सुविधाऐं प्रदान करता है। इस क्षेत्र के निवासियों को रोजगार के अवसर सुलभ कराता है। एक वृद्धि केन्द्र, एक केन्द्र स्थल की अथवा सेवा केन्द्र की सभी विशेषताऐं लिए हुए होता है। दूसरे शब्दों में सभी केन्द्र स्थल सेवा केन्द्र होते हैं तथा वृद्धि केन्द्र भी सेवा केन्द्र ही होते हैं। परन्तु एक वृद्धि केन्द्र सेवा केन्द्र की

सभी विशेषताओं के साथ–साथ एक विशिष्ट विशेषता और भी रखता है, जो इसे सेवा केन्द्र से अलग पहचान देती है। एक वृद्धि केन्द्र की सर्वाधिक अनिवार्य विशेषता यह है कि इसमें सतत रूप से वृद्धि की सम्भाव्यता का गुण होना चाहिए।

वस्तुतः यह वृद्धि एवं विकास की प्रवृत्ति ही है, जो किसी वृद्धि को अन्य सेवा केन्द्रों से अलग पहचान देती है इस प्रिकार वृद्धि की सम्भाव्यता वाले सेवा केन्द्र ही वृद्धि केन्द्र होते हैं। ये केन्द्र जनसंख्या की स्थायी एवं सतत वृद्धि दर्शाते हैं। तथा इनमें आर्थिक क्रिया कलापों की क्रमिक वृद्धि होती रहती है।

विगत पॉच दशकों में वृद्धि केन्द्र की संकल्पना ने अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की है। इस संकलपना को विकसित करने का श्रेय पश्चिमी अर्थशास्त्रियों ने एवं नियोजनकर्ताओं ने मुख्यतः पेराक्स, मिडलि, हिर्समैन मोसले एवं लेसयून आदि जैसे विद्वानों को दिया जाता हैं।

निष्कर्ष

विभिन्न विद्वानों का मत है कि समन्वित क्षेत्रीय विकास हेतु कुछ केन्द्रीय गॉवों व अधिवासों पर कुछ आवश्यक सामाजिक सुविधाओं की व्यवस्था करके विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। ये केन्द्रीय गॉव आस–पास के निवासियों को सुलभतापूर्वक सुविधाऐं प्रदान करा सकते हैं। इस प्रकार केन्द्रीय गॉव का चयन यद्यपि ऐच्छिक परन्तु मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता है क्योंकि विकास की प्रक्रिया प्रत्येक स्थान पर समान रूप से प्रस्फुटित नहीं होती, वरन कुछ उपयुक्त दशाओं वाले स्थानों पर ही उद्‌भूत हो सकती है, जहॉ से यह अन्य केन्द्रों को प्रसरित होती है। इस प्रकार वृद्धि केन्द्र उपागम संक्रेन्द्रण व विकेन्द्रण प्रक्रिया को संश्लेषण है। ऐसी परिस्थिति में जबकि सीमित संसाधनों के कारण सभी अधिवासों को विकसित नहीं किया जा सकता और न ही विकास के परिणामों को नगरीय एवं महानगरीय क्षेत्रों तक ही सीमित रखने दिया जा सकता है। एक मात्र तार्किक विकल्प यही हो सकता है कि वृद्धि केन्द्रों के माध्यम से विकास का विकेन्द्रीकरण किया जाए। ऐसी आशा की जाती है कि एक सुविचारित वृद्धि केन्द्र व्यूह रचना निःसंदेह सन्तुलित क्षेत्रीय विकास करने में सफलत होगी।

References

1. Perro0se, F : Economic Theory and Application, Quaterly Journal of Economics 1995 &. 64
2. Hirschman, A.O. – The strategy of Economic Development, The Free Press New york 1958
3. Lasuen J.R. – On Growth Poles, Urban studies 1979
4. Mosely M.J. – The Impact of Growth in Rural Region, I and II regional studies 1973
5. Christaller walter – Central Places in southern Germany. Prentice Hall Eagle wood cliff New Jersey. 1938
6. SEN, L.K. – Planning Rural Growth centres for Integrated Rural Development: A Study in Meryal Guda Taluka, NIRD, Hyderabad 1971, p.15

❖◆❖